

Vol II Issue VI Dec 2012

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary
Research Journal

Golden Research

Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595

ISSN No.2230-7850

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho Federal University of Rondonia, Brazil	Mohammad Hailat Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801	Hasan Baktir English Language and Literature Department, Kayseri
Kamani Perera Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka	Abdullah Sabbagh Engineering Studies, Sydney	Ghayoor Abbas Chotana Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]
Janaki Sinnasamy Librarian, University of Malaya [Malaysia]	Catalina Neculai University of Coventry, UK	Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Horia Patrascu Spiru Haret University, Bucharest, Romania
Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania	Ilie Pinteau, Spiru Haret University, Romania
Anurag Misra DBS College, Kanpur	Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Xiaohua Yang PhD, USA
Titus Pop	George - Calin SERITAN Postdoctoral Researcher	Nawab Ali Khan College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India	Iresh Swami Ex - VC. Solapur University, Solapur	Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur
R. R. Patil Head Geology Department Solapur University, Solapur	N.S. Dhaygude Ex. Prin. Dayanand College, Solapur	R. R. Yaliker Director Managment Institute, Solapur
Rama Bhosale Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel	Narendra Kadu Jt. Director Higher Education, Pune	Umesh Rajderkar Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik
Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur	K. M. Bhandarkar Praful Patel College of Education, Gondia	S. R. Pandya Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai
Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai	Sonal Singh Vikram University, Ujjain	Alka Darshan Shrivastava Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar
Chakane Sanjay Dnyaneshwar Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune	G. P. Patankar S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka	Rahul Shriram Sudke Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore
Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary, Play India Play (Trust),Meerut	Maj. S. Bakhtiar Choudhary Director,Hyderabad AP India.	S.KANNAN Ph.D , Annamalai University,TN
	S.Parvathi Devi Ph.D.-University of Allahabad	Satish Kumar Kalhotra
	Sonal Singh	

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net**



मृदुला गर्ग के उसके हिस्से की धूप उपन्यास में नारी चरित्रों का स्वरूप

वनिता त्र्यंबक पवार

स्वर्गीय अण्णासाहेब आर.डी. देवरे
कला व विज्ञान महाविद्यालय, महसदी ता. साक्री जि. धुळे

सारांश

मृदुला गर्गजी अपने उपन्यासों के माध्यम से नारी की सांस्कृतिक और सामाजिक छवि को तोड़कर नयी चेतना को जन्म देना चाहती है। इसलिए मृदुला गर्ग के उपन्यासों में चित्रित नारियाँ अपने सोच विचार अपना चिंतन, अपनी प्रतिभा, अपनी संवेदनाशीलता के कारण पाठकों पर अमिट छाप छोड़ती हैं। इनके उपन्यासों के नारी चरित्र लोग से हटकर या मार्ग दूँद रहे हैं, इस मार्ग पर चलने का विश्वास उनमें है। इस तरह 'उसके हिस्से की धूप' की मनीषा आत्मसार्थकता की तलाश करती है। लेखिका ने एक-एक चरित्र मूर्त कर, इन नारियों के एक-एक आयाम को स्पष्ट किया है।

प्रस्तावना :

मृदुला गर्ग के उसके हिस्से की धूप उपन्यास में नारी चरित्रों के स्वरूप को निम्न रूप से देखा जा सकता है।

उसके हिस्से की धूप में नारी चरित्रों का स्वरूप -

मृदुला गर्ग ने इस उपन्यास के माध्यम से स्त्री की प्रचलित छवि को बदलना चाहा है। 'मैं इस पुरुष के लिए क्या हूँ?' यह पूछनेवाली स्त्री यह प्रश्न पूछने लगती है कि, 'मैं क्या हूँ?' यह उपन्यास स्त्री को अपने आप से परिचित कराता है और सिर्फ परिचित ही नहीं कराता बल्कि स्त्री जीवन की सार्थकता का नया मार्ग भी तलाश करता है। 'उसके हिस्से की धूप' उपन्यास तीन शीर्षकों में विभाजित है। मनीषा जितेन से तलाक लेने के बाद, साढ़े चार साल बाद अचानक नैनीताल में जितेन से मिलती है। अतीत और वर्तमान को गुंथते हुए उपन्यास धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगता है। छह साढ़े छह साल पहले मनीषा ने जितेन के साथ एंजुड मैरिज किया था। बैंगलूर में जितेन की कागज बनाने की फैक्टरी थी। दिन रात अपने ही काम में व्यस्त जितेन खुद भी आजाद मिजाज का था और औरों को भी आजादी देता था। जितेन विचारों से परिपक्व एवं काफी समझदार आदमी था। वह रिश्तों को अपने या दूसरों पर हावी नहीं होने देता था। लेकिन मनीषा को वह समय नहीं दे पाता था। मनीषा के पास समय ही समय था। उसी को जितेन की प्रतीक्षा करनी पड़ती थी, जितेन को कभी मनीषा की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी जब चाहा तब पा लिया। आखिर में समय व्यतीत करने के लिए वह कॉलेज में अध्यापकी करने लगती है। वहाँ उसका परिचय अर्थशास्त्र के प्राध्यापक मधुकर नागपाल से होता है। दोनों एक दूसरे के प्रेम में पड़ते हैं। मधुकर का बेहद जरूरतमंद सहवास्य मनीषा को विशेष आकृष्ट करता है। मनीषा जितेन को लेकर सोचती है कि जो रिश्ता रात के अंधेरे में शुरू होता है, और दिन के उजाले के साथ समाप्त होता है उसे समाप्त कर देना बेहतर है। वह जितेन से तलाक लेती है और मधुकर से विवाह करती है। विवाह के बाद कुछ दिनों तक मधुकर और मनीषा ने जैसा चाहा वैसा जीवन जिया, परंतु एक दिन वह इस वैवाहिक जीवन से भी ऊब गयी। जितेन से दोबारा मुलाकात मनीषा में ताजगी भर देता है।

मनुष्य जिन स्थितियों में जी रहा होता है, उससे वह असंतुष्ट रहता है। उसे दूर के ढोल सुहावने लगते हैं। एक समय था जब जितेन के साथ वह जी रही थी तो वह स्वामित्व भरे प्रेम के लिए तरसती थी। जब मधुकर का स्वामित्व भरा प्रेम पाया तो जितेन की आजाद खयाली अच्छी लगने लगी। इस बात को उस समय झटका लगता है, जब जितेन एक पल में मोह के पाश तोड़ अपनी कर्तव्य पूर्ति के लिए निकल पड़ता है। यह बात मनीषा को सोचने के लिए बाध्य करती है। पति-पत्नी एक दूसरों से जुड़कर भी दोनों का अस्तित्व स्वतंत्र हो सकता है इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता मनीषा हर बार अन्य को आधार बनाकर जी रही थी इसलिए आधार के छूटते ही आधारित आरक्षित हो जाता था। दोनों की संतुष्टि लेखन से संभव थी। उसमें एक स्वाभिमान की गर्माहट थी। लिखना उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व का परिचय देनेवाली बात थी। उसमें आत्मगौरव था इस तरह वह सार्थकता की तलाश लेखन में ढूँढती है, जिससे उसे परम संतोष मिलता है।

उसके हिस्से की धूप उपन्यास नायिक प्रधान है। इस उपन्यास में केवल दो ही स्त्रियों का उल्लेख है। मनीषा उपन्यास का सर्वप्रथम पात्र है। सुधा सिद्धप्पा जो मनीषा की सहेली है, अत्यंत गौण रूप में चित्रित है। इस उपन्यास में पात्रों की भरमार नहीं है। केवल तीन ही चरित्र महत्वपूर्ण हैं - मनीषा, जितेन और मधुकर।

मनीषा :-

मृदुला गर्ग जी का 'उसके हिस्से की धूप' यह पहला उपन्यास है। एक लेखिका ने सृजन के क्षेत्र में कदम रखा और सबसे पहले अपनी ही दुनिया को (महिला) नये नजरिए से देखा। इसी नयी दृष्टि का परिचय 'उसके हिस्से की धूप' की मनीषा के माध्यम से मिलता है। लेखक यथार्थ को देखता है, महसूस करता है और आदर्श को चित्रित करता है। उस समय स्त्री का यथार्थ, व्यावहारिक जीवन अत्यंत बंध था। जीवन के प्रति स्त्रियों का देखने का दृष्टिकोण भी संकुचित था। स्त्री अपने आपको पुरुष से परिभाषित कर रही थी। अपनी सार्थकता हर बार किसी अन्य उससे अलग हो जाता था, उसे निराधार कर देता तो स्त्री भी कमजोर पड़ती थी, स्त्री को यदि पुरुष के बराबर समाज में स्थान पाना है, अपना अस्तित्व बनाना है तो सबसे पहले अपने प्रति देखने के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना आवश्यक था। मृदुला गर्गजी इस बाल को समझ रही थी। स्त्री की इस छवि से वह असंतुष्ट थी अतः नारी की एक नई छवि मनीषा के माध्यम से उन्होंने प्रस्तुत की। नारी चेतना में परिवर्तन लाने की बैचैनी मानो लेखिका के जेहन में ही है - ज्ञचेतना का संबंध निजी जीवन दृष्टि से होता है, जिससे परख कर इतिहास संस्कृति और मानवीय संबंधों का पुनः विश्लेषण किया जाता है। जाहिर है, इस प्रक्रिया में किसी न किसी रूप में व्यथा-स्थिति बदलती है। हम कह सकते हैं कि जो दृष्टि नारी की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक छवि के तिलिस्म को तोड़ वह नारी चेतना है।" लेखिका फेमिनिस्ट इस अर्थ में है कि वह नारी को परंपरागत सोच से मुक्ति दिलाती है

- "मैं समझती हूँ कि फेमिनिज्म का मतलब नारी-मुक्ति नहीं, सोय की मुक्ति है।" २ इसी सोच की मुक्ति के लिए 'उसके हिस्से की धूप' यह उपन्यास लिखा गया है। इस उपन्यास की नायिक मनीषा स्वतंत्र रूप से सोच रही है। अपने आपको आत्म-निर्भर बनाने का प्रयास कर रही है। अपनी सार्थकता ढूँढ रही है। एक स्वतंत्र मनुष्य की तरह जीने की ललक उसमें है। अपना जीवन उमंग, उल्लास से वह भरना चाहती है। अपनी तमाम उर्जा और महत्वाकांक्षाओं को बरकरार रखते हुए स्वाभिमान से जीने की तडप उसमें है।

आत्मसार्थकता की तलाश करती हुई मनीषा -

मनीषा शिक्षित है। आत्मसार्थकता की तलाश वह कर रही है। तब वह पाती है कि उसकी सार्थकता सिर्फ पुरुष के साथ अपने-आपको जोड़कर देखने में नहीं है; और नहीं पुरुष के द्वारा गढ़ी गयी परिभाषा के अनुरूप अपने को ढालने में है। बल्कि अपना संपूर्ण जीवन स्वयं के द्वारा भरने में है। जिंदगी को भरने के लिए उसे हमेशा कुछ न कुछ करना पड़ेगा। अपने को व्यस्त रखना पड़ेगा। जितने की अति व्यस्तता को देखकर वह सोचती है - "आदमी जब दूसरों के काम न करने का वर्णन करके अपनी अतिव्यस्तता की शिकायत करता है, तभी वह सबसे ज्यादा खुश भी रह सकता है। मैं बहुत व्यस्त हूँ। कहकर मनुष्य जिस संतोष का अनुभव करता है, मैं प्रेम करता हूँ कहकर कभी नहीं कर सकता।" ३ अपने आप को व्यस्त रखने के लिए सदैव कुछ न कुछ करना ही पड़ेगा। कुछ करेंगे तो ही कुछ कठिनाईयाँ, कुछ मुश्किलें पैदा होंगी। मुश्किल ही न ही तो आदमी जूझे किससे? जूझना नहीं तो जीने में आनंद नहीं, आत्म-संतुष्टता नहीं। अतः वह इस निर्णय पर पहुँचती है कि जब वह वही करेगी जिससे उसको तरक्की मिलेगी। जो उसको आत्मगौरव से भर देगा। जो उसके जीवन के खालीपन को भरेगा जिसका साथ कभी न छूटेगा। ऐसा कर्म जिससे उसको कभी छुटकारा न मिलेगा। जितने जब उसकी कहानियों की किताब छपाकर ऑटोग्राफ के लिए लाता है। तो मनीषा ने उसे कसकर थामा और अपना नाम मुखपृष्ठ पर लिख दिया। मनीषा का यह अपना नाम है। उसका तालुक न जितने के नाम से है और न मधुकर नागपाल से मनीषा 'म' के मुखपृष्ठ पर फैलते-फैलते, उसके ओठों पर की संतुष्ट मुस्कुराहट फैल गयी। उन्होंने आत्मगौरव का अनुभव इन कहानियों को लिखते समय किया था। आज जितने के सामने अपनापन घोषित करते हुए फिर उसके अंतर को गहरे से छू गया। हस्ताक्षर कर देने के बाद भी कुछ देर तक किताब को कसकर थामे रही और नजर मुखपृष्ठ पर जमाते रही। लगा जीवन की तमाम विचलता के बीच एक ऐसा बिंदू भी है जो सदा अपनी जगह स्थिर रहेगा।

इस स्थिर बिंदू को पाना ही आत्मसार्थकता की तलाश का पूर्ण होना है। इस तरह मनीषा लेखन में जुट जाती है। यह कार्य पूर्ण करने के लिए जिंदगी से समय चुराना पड़ता है। उसे किसी की चिंता नहीं है। उसे कोई लेखक माने या न माने वह लिखती रहेगी। मधुकर से महत्व दे या नये अपने काम में जुट जाएगी। इस निर्णय ने उसको एक सुखद अनुभूति दी है। वह सीधी अपने कमरे में रखी अपनी लिखाई के मेज पर जा पहुँची और वहाँ पड़ा कलम हाथ में थाम लिया। तुम मुझे लेखिका मानो न मानो, मधुकर कुछ फर्क नहीं पड़ता, उसने मन ही मन कहा। मैं लिखुंगी, अवश्य लिखुंगी और वह, जो मुझे पारितोष दे सके। उससे और कोई नतीजा न भी निकले, कम से कम मुझे तसल्ली होगी कि जो कुछ मैं कर सकती थी मैंने किया। खी केद्वित साहित्य का यह नया संभावित सौंदर्य है जिसमें खी निर्णायक शक्ति बन जाती है। खी की पहचान उसके निर्णायक शक्ति बनने में है। खी स्वयं को निर्णायक शक्ति मानेगी तो ही समाज भी उसे निर्णायक शक्ति के रूप में देखेगा। तब उसकी छवि बदल जायेगी।

सुधा सिद्धा :-

'उसके हिस्से की धूप' उपन्यास में दूसरा नारी चरित्र सुधा सिद्धा है। सुधा मनीषा की सहेली है। बंगलूर के सेंट जोसेफ कॉलेज में अंग्रेजी की प्राध्यापक है। उसी महाविद्यालय में अंग्रेजी में एम.ए. किया है। कन्नड भाषा में कहानियाँ लिखती है। अविवाहित है अतः कुंवारी लडकियों की तरह खूब हँसती है, क्योंकि उसका कोई पतित्व करनेवाला नहीं है। सबके साथ मिल-जुलकर रहना उसका स्वभाव है। हँसने के लिए कोई साथी चाहिए, वह कोई भी हो सकता है - जैसे फाटक पर खड़ा चपरासी, बस में पास बैठा सहयात्री, सड़क पर खेलता नन्हा बच्चा, स्टाप-रूम की सबसे प्रौढ़ और गुरु-गंभीर प्रोफेसर आदि। सरल स्वभाव की रोमानी प्रकृति की सुधा बहस करने में भी काफी तेज है। उससे बहस में कोई जीत नहीं सकता - "अच्छा छोड़, तुमसे बहस करना तो बिजली के बल्य को फूँक मारकर बुझाने के प्रयत्न के समान बेकार है।" ४ सुधा उन्मुक्त विचारों की है। उसकी मान्यता है कि जिससे प्रेम हो जाए उससे विवाह करना जरूरी नहीं है - "मैं कह रही थी कि यदि मैं मधुकर से प्रेम करती भी तो विवाह नहीं कर सकती थी।" ५ इस तरह सुधा प्रेम को अपने जीवन में उतना महत्व नहीं देती जितना मनीषा। वह यह भी मानती है कि प्रेम करनेवाला व्यक्ति संसार भर से तिरस्कृत हो जाता है। प्रेम के मामले में जहाँ सुधा का यह दृष्टिकोण है वहीं वह संस्कृति से जुड़ी हुई भी है। अपने दो हजार वर्ष प्राचीन संस्कृति को पल भर विस्मृत कर दुँगी। इस उपन्यास में सुधा सिद्धा मनीषा की सहेली के रूप में चित्रित है। न तो उसके व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास हुआ है और न ही विस्तार से यह पात्र चित्रित। केवल मनीषा को विकसित करने के लिए सहायक भर है।

लिष्कर्ष -

'उसके हिस्से की धूप' इस उपन्यास में नायिका मनीषा को नये रूप में चित्रित करना लेखिका का उद्देश्य है। मनीषा परंपरागत भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करनेवाली नहीं है। बल्कि उसे संपूर्ण मानवीय कमजोरियों के साथ मनुष्य के रूप में चित्रित किया गया है। इस उपन्यास की एक विशेषता: यह है कि, लेखिका पुरुष पात्रों का चित्रण भी परंपरागत रूप से हटकर करती है। वास्तव में पुरुष की मानसिकता में जब तक परिवर्तन नहीं आता तब तक स्त्रियों की स्थिति में भी परिवर्तन संभव नहीं है। मृदुलाजी जिस रूप में पुरुष को देखना चाहती है, उसी रूप में जितने का चित्रण किया है। सामाजिक नियमों का पालन करना जितना खी के लिए अनिवार्य है उतनाही पुरुष के लिए।

इस तरह समाज खी को निर्णायक शक्ति के रूप में देखेगा। तब उसकी छवि बदल जायेगी। इतिहास में जो खी की छवि अंकित है, चाहे वह पुरुष करे या खी उसका प्रभाव समाज में स्वीकृत छवि पर पड़ता है। बहुत धीमे मंथर और नामालूम गति से, और परोक्ष रूप से, पर पड़ता जरूर है। स्वयं खी का लेखन जब स्थापित स्वीकृत छवि का विखंडन करके नई छवि गढ़ता है तो, उसका प्रभाव पुरुष के विखंडन से प्रथक और अधिक प्रबल रूप से पड़ता है, क्योंकि वहाँ खी का उस तरह का लेखन कर पाना भी, अपने में एक नई छवि को प्रतिपादन करना है, उसे पुष्ट करना है। इन्हें इस तरह मृदुलाजी ने खी की तरफ देखने का दृष्टिकोण बदलने का प्रयास अपने उपन्यासों के माध्यम से किया है। इसलिए समकालीन कथा लेखिकाओं ने वैवाहिक जीवन को प्रतिभा का नारा करनेवाला माना है। केवल प्रतिभा का नाश ही नहीं बल्कि खी की अस्मिता को बचाये रखने के लिए लेखिका ने 'उसके हिस्से की धूप' यह उपन्यास लिखा है।

संदर्भ सूची

- १ चुकते नहीं सबाल - मृदुला गर्ग - पृ. ४९
- २ वही - पृ. ७७
- ३ उसके हिस्से की धूप - मृदुला गर्ग - पृ. १६२
- ४ मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी - डॉ. रमा नवले - पृ. १३५
- ५ उसके हिस्से की धूप - मृदुला गर्ग - पृ. १०३
- ६ समागम - मृदुला गर्ग - पृ. १३०

Publish Research Article International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- * International Scientific Journal Consortium Scientific
- * OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net